जुलाई-अगस्त 2022

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

4 हैण्डबॉल की तैयारी

उड़ान

5 एक था माली

6 मेरी गैया

7 मिठाई

8 गर्मी आई

9 रसीला

10 हिरण और किसान

ज्ञान विज्ञान

12 तापमापी

जोड़-तोड़

13 निधि का बर्थडे

कलाकारी

15 कार्डशीट के कपड़े

बात लै चीत ले

16 सोहन की बेटियाँ

18 पाँच बंदर

20 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

21 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

भारती गुर्जर, कक्षा-2,
राजकीय अपर प्राथमिक विद्यालय फरिया

सम्पादन : राजेश कुमावत
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **भारती माली**, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान
वर्ष 14 अंक 145-146

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन: 07462-220957

परिचय

दिलखुश गुर्जर, कक्षा-6, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

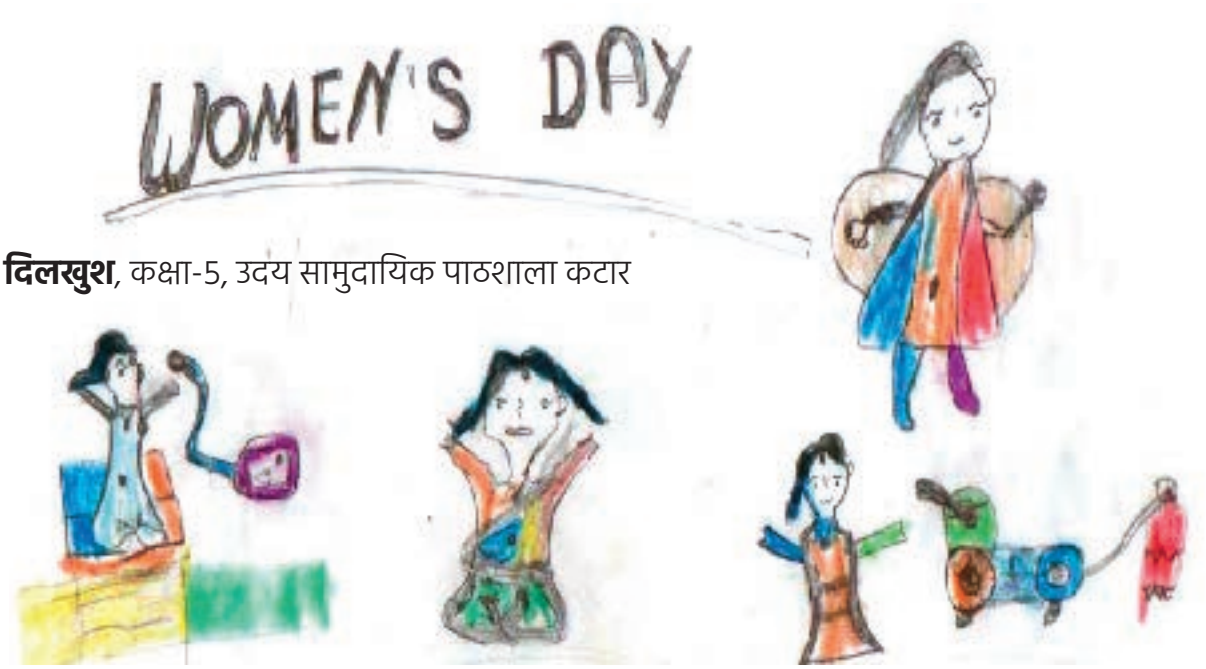

दिलखुश, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

खेल खिलाड़ी

हैण्डबॉल की तैयारी

करीना सैनी, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

मैं आज आपको खेल के बारे में बताऊंगी। मैं हैण्डबॉल खेलती हूँ। मुझे पहले खेल के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं था इसलिए हमें जो खेल खिलाये जाते थे हम वही खेलते थे। हैण्डबॉल खेल के बारे में हमें जब पता चला जब हमारे स्कूल में खेल शिक्षिका ममता मेडम आई। उन्होंने हमें हैण्डबॉल की तैयारी करवाई। शुरुआत के समय हम इसे मजाक में लेते थे लेकिन धीरे-धीरे हमें अहसास हुआ कि जब हमसे हमारी बराबरी की टीम टकराई और हम उनके सामने अच्छा नहीं खेल पाये तब हमने खेल समझा और हमने खेल को सही ढंग से खेलना शुरु किया। हमारी ममता मेडम हमें खूब जिम्मेदारी के साथ खिलाती है। पहले हमें ढंग से बॉल तक पकड़ना नहीं आता था लेकिन ममता मेडम ने हमें सब कुछ सिखा दिया और अब हम बहुत अच्छी तरह से बॉल पकड़ लेते हैं और लम्बी भी फेंक देते हैं। हम में से किसी के पास जूते थे और किसी के पास नहीं थे तो हमारी ममता मेडम ने एक क्लब चलाया जिसमें हमने सारी लड़कियों ने 30-30 रुपये जमा करवाये। इन रुपयों से हम हमारे लिए जूते और ड्रेस लाने वाले हैं। हमारी टीम में कुछ लड़कियाँ शरीर से कमजोर हैं इसलिए हमारी मेडम ने हमसे 20-20 रुपये मंगवाये और रोज सुबह हमें खाने के लिए बोला और हम रोज उन्हें खाते हैं और ना तो हमें खेलने में दिक्कत आती है और ना ही कमजोरी महसूस होती है। और ये सब जब से शुरु हुआ तब से ममता मेडम आई। उन्होंने ही हमें खेल खेलने के लायक बनाया। वे हमें बहुत अच्छा खिलाती हैं। हमें थोड़ी सी भी परेशानी नहीं होती।

आरती बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

उड़ान

ज्योति मीना, कक्षा-7, उराजकीय विद्यालय खाण्डोज

एक था माली

एक था माली
उसने लगाई बाली
माली की पत्नी थी काली
काली गई बाजार
बाजार से लाई अमरुद
अमरुद थे कच्चे
उधर से आये बच्चे
बच्चों में थे बस्ते
अमरुद हो गये सस्ते
बच्चों ने खरीदे गस्ते
गस्ते थे सफेद

माली ने बुलाया उम्मेद
उम्मेद की बहन थी सविता
खत्म हुई कविता।

विजय गुर्जर, कक्षा-7,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मेरी गैया

मेरी मैया मेरी मैया
मैया तूने देखी क्या मेरी गैया
गैया है वो बहुत निराली
शरीर में वो काली-काली
जंगल में वो चरने जाती
हरा-भरा घास चरकर आती
वो हमको बहुत अच्छी लगती
रोज हमको दूध पिलाती
सुबह-सुबह चरने निकल जाती
शाम होते ही घर को लौट आती।

कृष्णा बैरवा
समूह-हरियाली, उम्र-13 वर्ष

आरती नायक, कक्षा-6 उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मिठाई

आई है दीवाली
सुनो जी घरवाली
आई है मिठाई
सुनो जी कालीबाई
काली ये मिठाई
खाओ जी लालीबाई
एक बार जो खाये
हाथों को चाट जाये
खाने वाले आये
मन मेरा भी ललचाये
प्लेट भर के लायें
सब मिठाई खायें।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-7,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

जमना बावरी, उम्र-7 वर्ष, शिक्षण केन्द्र बावरी बस्ती, स.मा.

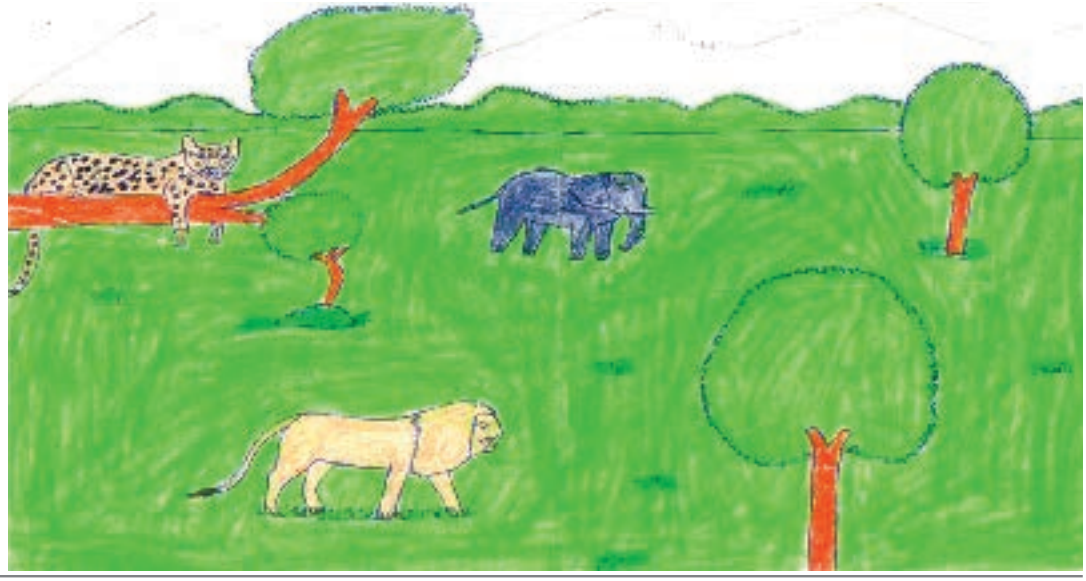

मोहित माली, कक्षा-6, राजकीय
प्रा. विद्यालय जामुलखेड़ा

गर्मी आई

गर्मी आई गर्मी आई
पंखें, कूलर साथ में लाई
सबके पसीना बहाती आई
कम्बल को भगाती आई
सबको बाहर सुलाती आई
सूती कपड़े साथ में लाई।

आरती गुर्जर, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

कोमल बैरवा, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

किस्मत बैरवा, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

रसीला

एक बार की बात है। एक आदमी था। उसका नाम रामनाथ था। वह खेती का काम करता था और उसकी पत्नी घर का काम करती थी। उसके दो पुत्र तथा एक पुत्री थी। पुत्री का नाम रसीला तथा दोनों पुत्रों के नाम रविन्द्र तथा देविन्द्र थे। । गरीब स्थिति होने की वजह से उस आदमी के दोनों पुत्र गंगापुर में पैसे कमाने के लिए चले गये। उसकी पुत्री कक्षा 10वीं में पढ़ती थी। उसके पुत्रों को गंगापुर में काम करते-करते 2 वर्ष बीत गये। रसीला ने भी 12वीं कक्षा पास कर ली। परन्तु आगे की पढ़ाई करने के गाँव के नजदीक कोई कॉलेज नहीं था। रसीला पढ़ने में होशियार थी और वह आगे की पढ़ाई करके सरकारी नौकरी लगना चाहती थी। एक दिन जब उसके दोनों भाई गाँव में आये तो उसने अपने भाइयों से कहा, भाइयों मुझे भी गंगापुर ले चलो मैं वहीं पढ़ लूंगी क्योंकि यहाँ तो 12वीं कक्षा तक ही स्कूल है। उन दोनों भाइयों ने रसीला को साथ ले जाने की हाँ कर दी। रसीला भी उन दोनों भाइयों के साथ गंगापुर चली गई और रसीला का कॉलेज में एडमीशन करा दिया। रसीला रोज कॉलेज में पढ़ने जाती। इसी प्रकार रसीला के तीन-चार साल गुजर गये। रसीला की पढ़ाई पूरी होते-होते उसकी नौकरी लग गई। नौकरी लगने पर उसके माता-पिता और दोनों भाई बहुत खुश हुए। गाँव वालों ने सोचा कि अब तो हम भी हमारे बच्चों को स्कूल भेजेंगे। रसीला के मन में बहुत खुशी थी। उसने गाँव वालों को मिठाई बांटी और अपने कॉलेज वालों को भी मिठाई खिलाई। तब से उस गाँव के लोग भी अपने बच्चों को नियमित पढ़ाने लगे।

गोलमा गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

हिरण और किसान

आरती गुर्जर, कक्षा-6,
राजकीय उच्च प्राथमिक
विद्यालय कटार

एक बार एक किसान था। वह किसान मेहनती और दयालू था। एक दिन वह लकडियाँ काटने जंगल में गया। वह जंगल बहुत ही घना था। चारों और पेड़-पौधे थे। उस किसान को डर लगने लगा। लकड़ियों की आवाज एक शेर ने सुन ली। उस शेर ने सोचा कि आज तो मजा आ गया। लगता है कोई मनुष्य जंगल में आया है। आज तो खुद शिकार शिकारी के पास आ गया है। शेर तेजी से उसकी तरफ आ रहा था। थोड़ी देर बाद आदमी ने मुड़कर देखा तो एक हिरण पिंजरे में फंसा हुआ था। वह हिरण जोर-जोर से चिल्ला रहा था। आदमी को उस हिरण पर तरस आ गया और उसने हिरण को पिंजरे में से निकाल दिया। वह हिरण उस आदमी को देखते हुए वहीं पर खड़ा रहा। शेर तेजी से आ रहा था तो हिरण को पता चल गया। हिरण ने उस आदमी से कहा भाई जल्दी से झाड़ियों में छिप जाओ। वह आदमी झाड़ियों में छिप गया। वहाँ पर शेर आया तो उसने देखा तो उसे कोई नहीं दिखा फिर शेर वहाँ से चला गया। थोड़ी देर बाद में वह दोनों झाड़ियों में से निकले। हिरण ने आदमी से कहा, "अगर आज यह पेड़-पौधे नहीं होते तो सारे जानवर और हम भी मारे जाते। इसलिए हमें पेड़-पौधों को कभी नहीं काटना चाहिए।" उस आदमी ने वादा किया और कहा कि, "मैं आज के बाद पेड़ नहीं काटूंगा और किसी को भी काटने नहीं दूंगा। तुम्हारा धन्यवाद हिरण जो तुमने मुझे यह बात बताई।"

मीनाक्षी बैरवा, समूह-हरियाली, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

तापमापी

हेमन्त गौड़ कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

3 मार्च को हमारे स्कूल उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा में विज्ञान प्रदर्शनी थी। हमारी तैयारियाँ चल रही थी। गुरूजी हमें एक-एक प्रयोग दे रहे थे। गुरूजी ने मुझे डॉक्टर तापमापी वाला प्रयोग दिया और कहा क्यों तुम्हें तापमापी वाला प्रयोग याद है। मैंने झूंठ-मुंठ हाँ भर ली लेकिन जब गुरूजी ने सभी से एक-एक करके प्रयोग के बारे में पूछने लगे जब मेरा नम्बर आया तो मैं चुपचाप खड़ा हो गया। गुरूजी ने मुझसे पूछा कि तापमापी कितने प्रकार की होती है तो मैं चुप-चाप खड़ा रहा। गुरूजी ने मुझे थोड़ा सा डांटा और कहा कि अभी तो तू बैठ जा फिर तुझे इसके बारे में समझाऊंगा। जब सारे बच्चों का हो गया तो सरजी मुझे प्रयोग शाला में लेकर गये और मुझे तापमापी बताई। मैंने डॉक्टर तापमापी तो पहले से ही देख रखी थी लेकिन प्रयोगशाला तापमापी को मैंने एक कांच की डंडी सोची और उसके अंदर भरे पानी को खून समझा। गुरूजी ने डॉक्टर तापमापी बताई और उससे मेरा भी तापमान मापा। मेरा तापमान मापा तो मेरा तापमान 96.3 F आया और मुझे प्रयोगशाला तापमापी के बारे में बताया कि इससे प्रयोगशाला का कोई भी द्रव मापा जाता है फिर गुरूजी ने मुझे गर्म पानी का तापमान मापकर बताया तो उसका तापमान 50 डिग्री आया। गुरूजी ने कहा कि जो यह लाल-लाल है इसको पारा कहते हैं। पानी का तापमान 100 डीग्री हो जाता है तो वह उबलने लग जाता है। गुरूजी ने मुझे ठंडे पानी का तापमान मापकर बताया तो उसका तापमान 20 डीग्री आया। गुरूजी ने कहा अगर यह 0 डिग्री हो जाता है तो पानी बर्फ में बदल जाता और कहा कि 98.6 एफ. और 37 डीग्री बराबर होता है। अगर 98.6 थ् से ज्यादा ताप हो जाए तो हमें बुखार हो जाता है। फिर 3 मार्च को हमारी विज्ञान प्रदर्शनी का मेला लगा। इसमें और स्कूल मास्टर व गुरूजी भी आये। मुझसे बहुत से बच्चों ने सवाल-जवाब किये फिर एक गुरूजी ने कहा कि यह क्या होता है फिर मैंने बताया कि यह डॉक्टर तापमापी होती है इससे मनुष्य का तापमान मापा जाता है। उन्होंने कहा कि इससे अगंूठा लगाकर मापते हैं तो मैंने कहा कि नहीं इसको जीभ के नीचे लगाकर मापते हैं। फिर उसने कहा कि मापकर दिखाओ। जब मैं मापने लगा तो वे चले गये।

मानसिंह गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

जोड़ - तोड़

अमन सैनी, राजकीय विद्यालय खाण्डोज

निधि का बर्थडे

मेरा नाम इशु है। मैं कक्षा पाँच में पढ़ती हूँ। मेरी एक बहिन है जो मुझसे तीन वर्ष छोटी है। उसका नाम निधि है, जो कक्षा दो में पढ़ती है। इससे पहले मैं दो और विद्यालय में पढ़ चुकी हूँ। मैं गणित में थोड़ी सी कमजोर हूँ। हर बार की तरह इस बार भी निधि का बर्थडे मेरे से पहले ही आया है। इस बार निधि ने अपने बर्थडे पर पापा से पैसे लेकर स्कूल के सभी बच्चों व शिक्षकों को टॉफी बांटी। निधि को सभी शिक्षकों की तरफ से ड्रेस भी दी गई। यह सब देखकर मुझे अच्छा भी लग रहा और बुरा भी। मैं हर बार सोचती रहती कि मैं निधि से तीन साल बड़ी हूँ तो मेरा बर्थडे उससे पहले आना चाहिए किन्तु इस बार भी उसका बर्थडे मुझसे पहले ही आया है। मेरे दिमाग में हमेशा यही रहता कि निधि मुझसे बड़ी कैसे हो सकती है। यह बात मैंने गुरुजी से भी पूछी कि मैं निधि से बड़ी हूँ फिर भी मुझसे पहले निधि का बर्थडे क्यों आता है? इस पर उन्होंने कहा कि यह मै तुम्हें कल गणित की कक्षा में बताऊंगा। अब मुझे गणित की कक्षा का इंतजार था क्योंकि आज मुझे मेरे सवाल का जवाब मिलने वाला था। आज मुझे हिन्दी पढ़ने में बिल्कुल भी मजा नहीं आ रहा था। मुझे तो गणित के पीरियड का इंतजार था। थोड़ी देर बाद गुरुजी ने गणित का कार्य शुरु कर दिया। गुरुजी ने हमारे बीच में कैलेंडर लाकर रख दिया और बताया कि आज हम कैंलेंडर को पढ़ना सीखेंगे। गुरुजी ने हमें सप्ताह के नाम, महिनों के नाम और हमारे त्यौहार कौनसे महिने में कौनसी तारीख को आते हैं यह सब देखना सिखाया। अब मैं भी कैलेंडर को देखना सीख चुकी थी किन्तु अभी भी मेरे दिमाग में जो सवाल था उसे मैंने गुरुजी को याद दिलाया। गुरुजी ने हाजरी रजिस्टर से मेरी जन्म तिथि 02.03.2013 कैलेंडर में ढूंढकर बताने के लिए कहा। मैंने मार्च के महीने को खोजकर दो तारीख गुरुजी को बता दी। अब गुरुजी ने मुझे निधि

की जन्म तिथि 03.02.2016 राजेश गुरुजी से लेकर आने के लिए कहा। मैं दौड़कर गई और निधि की जन्मतिथि लेकर आई। फिर मुझे गुरुजी ने इसे कैलेंडर में ढूंढने के लिए कहा। मैंने कैलेंडर को खोलकर निधि की जन्म तिथि गुरुजी को बता दी। अब गुरुजी ने मुझसे पूछा कि तुम्हारा जन्म दिन और निधि का जन्म दिन दोनों में से किसका जन्म दिन पहले आता है? यह कैलेण्डर से पता करके बताओ? मैंने कैलेंडर से बता किया कि निधि का जन्म दिन मुझ से पहले आ रहा है। इस प्रकार मैं समझ गई कि निधि का जन्म दिन मुझसे पहले क्यों आता था।

ईशु कुमावत, उम्र-9 वर्ष, समूह-सूरज, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

धोड़ी गुर्जर, कक्षा-3, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार

कलाकारी

कार्डशीट के कपड़े

कल हमने पुरानी कार्डशीट जो कुछ काम में नहीं आ रही थी, उसको काम में लेने की कोशिश की। मैंने पुरानी कार्डशीट से कुछ कपड़े बनाये। अपना दिमाग लगाकर कुछ कपड़े बनाये जो राजस्थान में पहने जाते हैं जैसे कि - घाघरी, लुगड़ी, धोती, कुर्ता, शर्ट, पेंट, पजामा, प्लाजा, जेगींग, जीन्स, कोट, पेंट, ठुकरानी बेस, चुन्नी बेस, लांचा, गाऊन, फ्रोक, मेक्सी, चुन्नी, आदि कुछ पहनते हैं। मैंने सोचकर एक पुरानी गुलाबी कलर की कार्डशीट ली। उसमें पेंसील से फ्रोक बनाई और जहां पर कार्डशीट खाली थी वहाँ से उसको काट लिया और उसमें बहुत सुंदर-सुंदर रंग भर दिये। जब मैंने उसको बनाया तो मेरे मन में विचार आया कि मैं इसकी अच्छी डिजाइनर हूँ, सुंदर कलर भरूँ तो मैंने वैसा ही किया। जब मैंने बताया तो मुझको वह बहुत डिजाइन वाली और अच्छी फ्रोक लगी फिर फ्रोक के बाद मैंने घघरी, पगड़ी भी बनाई।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

पूजा बैरवा, कक्षा-6, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रांवरा

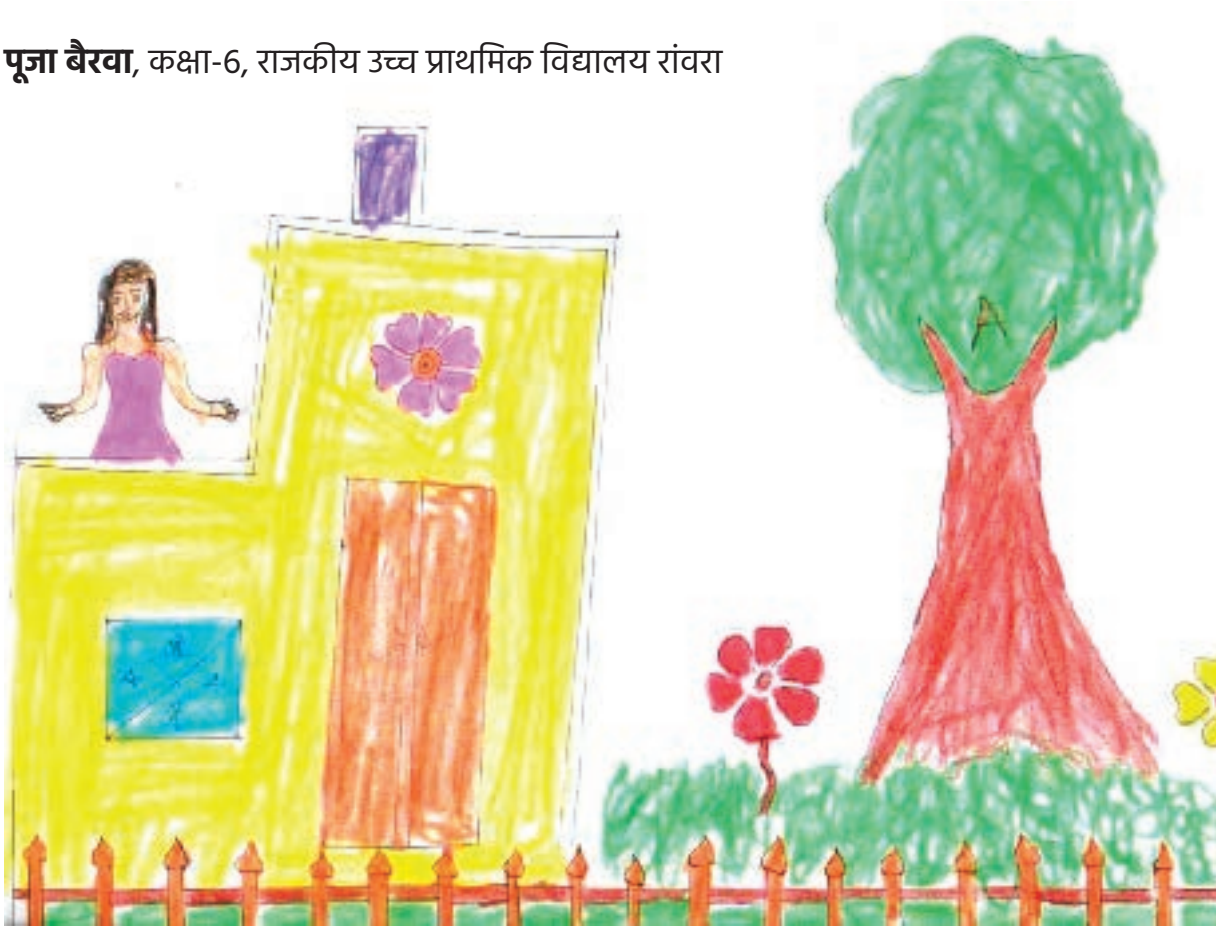

बात लै चीत ले

सोहन की बेटियाँ

मंजु गुर्जर, कक्षा-6, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रांवरा

एक बार दो भाई थे। एक का नाम सोहन और दूसरे का नाम मोहन था। मोहन बड़ा और सोहन छोटा था। मोहन के एक बेटा तथा सोहन के दो बेटियाँ थी। मोहन सोहन से कहता कि मेरा बेटा समाज में नाम रोशन करेगा। सोहन बोला भाई बेटियाँ बेटों से कम नहीं होती है। यह तो हमारा समाज ही ऐसा है जो बेटियों को कमजोर मानता है। दोनों भाइयों के बच्चे धीरे-धीरे बड़े होने लगे। उन्होंने तीनों बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल में एडमिशन करवाया। सोहन ने अपनी दोनों बेटियों का एडमिशन गांव के स्कूल में करवाया और मोहन ने अपने बेटे का एडमिशन शहर जाकर करवाया। सोहन की दोनों बेटियाँ पढ़ने में होशियार थी लेकिन मोहन का बेटा स्कूल जाता तो रोने लग जाता। अगर जाता भी तो वहाँ पढ़ाई पर ध्यान न देता। कभी किसी बच्चे को मारता। मोहन के बच्चे की प्रतिदिन घर पर शिकायत

आने लगी। सोहन बोला भाई इसे तुम्हारे ही लाड़ प्यार ने बिगाड़ा है। अगर तुम इस पर इतना प्यार नहीं दिखाते तो रोज इसकी शिकायत नहीं आती। सोहन तो घमंडी था ही। उसे अपने बेटे पर गर्व था कि किसी न किसी दिन मेरा बेटा मेरा नाम रोशन करेगा। मोहन की बात सुनकर सोहन वहाँ से चला जाता है। सोहन की बड़ी बेटी एक दिन मोहन के घर आकर बोली ताऊजी आप भाई को हमारे साथ गाँव के स्कूल में भेज दिया करो। वहाँ इतनी दूर शहर में जाकर भी तो यह नहीं पढ़ता लेकिन मोहन ने उस लड़की को भी बहुत डाटा और वहाँ से भगा दिया। उसने अपने पापा को घर आकर सारी बात बताई। तो उसके पापा ने कहा तुम्हारे ताऊजी तो समझाने के बजाय उसको सिर पर चढ़ा रहे हैं। अभी तो वह बच्चा है उसे हम जैसा बनाते हैं वह वैसा ही बनता है तीनों बच्चे बड़े हो गये सोहन की बेटियाँ पढ़ लिखकर अपनी मेहनत से अच्छी अधिकारी बनी और सोहन का बेटा जहाँ था वहीं रह गया। मोहन को भी बहुत पछतावा हुआ लेकिन सोहन की बेटी बोली ताऊजी तुम हिम्मत मत हारो। भाइयों के पास अभी भी वक्त है। वह पढ़ लिख कर अपने पैरों पर बड़ा हो सकता है। उस लड़की की बात सुनकर मोहन को अच्छा लगा। उसने कहा कि बेटा अपनी बहनों जैसा बन। उस लड़के को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने खूब मेहनत की और वह अपने काम में कामयाब हुआ। उसने नौकरी जोइन की और अपने परिवार के साथ खुश रहने लगा और फिर उसने अपनी बहन का शुक्रिया अदा किया और कहा कि तुम्हारे समझाने पर आज मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। वह बोली नहीं तुम यहाँ तक अपनी मेहनत से पहुँचे हो।

सफेदी गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मनीषा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

पाँच बंदर

अनूप, कक्षा-2, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

हमारे गाँव में एक बार हरियाली के दिन पांच बंदर आ गये। जब हम बाजरा काटने गये थे और वापस आये तो गाँव में हमने पहली बार बंदर देखे। पहले तो उन्होंने कोई छेड़-छाड़ नहीं की। जब हम बाजरा पूरे गाँव में बाटकर आ गये तो फिर हमने उन बंदरों को देखा तो वे हमारी नीम की डाली पर बैठे थे। हमने उनके साथ कोई छेड़-छाड़ नहीं की। हम खाना खाकर सो गये। फिर हम सुबह उठे तो हमने देखा कि हमारे गाँव का एक आदमी उनको बिस्कुट खिला रहा था। उस आदमी का नाम कमलेश था। फिर हम माताजी की पूजा करने चले गये फिर मैं पूजा करके आई तो देखा कि वे बंदर शरारत करने लग गये। उन्होंने किसी के कपड़े फाड़ दिये तो किसी के कोल्हू फोड़ दिये। कोई उनके पत्थर की मारकर भगाता। इस तरह सारे गाँव वाले उन बंदरों से बहुत परेशान हो गये। फिर सभी गाँव वालों ने मिलकर उन बंदरों को गाँव से भगाया।

सपना बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मूर्ति गुर्जर, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

माथा पच्ची

1. एक पैर बाकी धोती, सावन में वह अक्सर रोती।
2. एक दुकानदार ऐसा जो दाम भी लेता और माल भी।
3. सफेद तन हरी पूंछ, न बूझे तो नानी से पूछ।
4. बूझौ भैया एक पहेली, जब काटो तो नई नवेली।
5. छोटे से मटकू दास, कपड़े पहने एक सौ पचास।

इंटरनेट से साभार

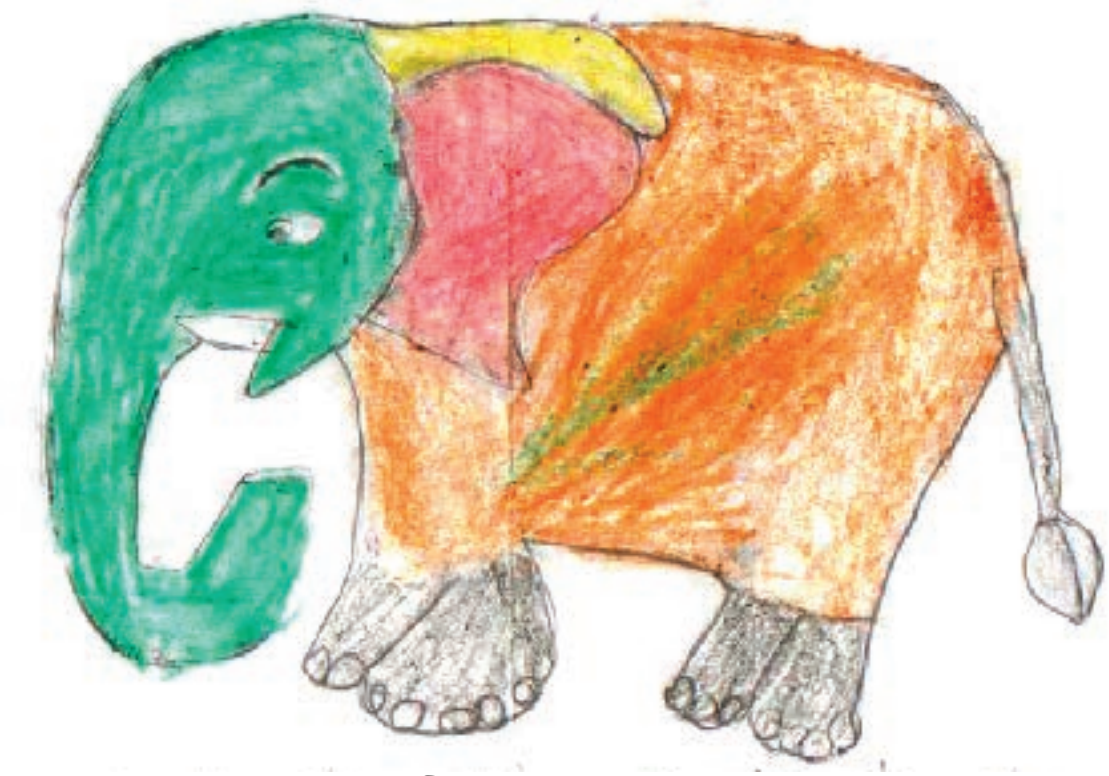

आशा जांगिड़, कक्षा-6, राजकीय विद्यालय छारोदा

हीहीही-ठीठीठी

एक मच्छर परेशान बैठा था।
दूसरे ने पूछा - भाई क्या हुआ तुझे?
पहला बोला - यार गजब हो रहा है, चूहेदानी में चूहा,
साबुनदानी में साबुन, मगर मच्छरदानी में आदमी सो रहा है।

जगदीश कोली, संदर्भ शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

मंदिर में रखी घंटी,

देखे उसको बंटी ...

नरेन्द्र नायक

समूह-सूरज, उम्र-9 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार के द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

लोकेश गुर्जर, कक्षा-7, राजकीय सीनियर सेकेन्डरी स्कूल पालीघाट

एक गाँव था। उस गाँव में श्याम नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत ही गरीब था। वह एक झौपड़ी में रहता था और सब्जी बेचने का काम करता था। परन्तु गाँव में उससे कोई भी सब्जी नहीं खरीदता था जिसके कारण उसका मन हमेशा दुःखी रहता था। उसने सोचा कि इससे तो अच्छा मैं शहर में जाकर कोई काम-धन्धा कर लेता हूँ। एक दिन .....

दिलराज मीना, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा के द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

आराध्य वर्मा कक्षा-4, फेलोशिप सेंटर कुतलपुरा मालियान

दिया कुमारी, कक्षा-3, फेलोशिप सेंटर खवा

पहेलियों के ज़वाब -

1. छतरी 2. नाई 3. मूली 4. पेंसिल 5. प्याज

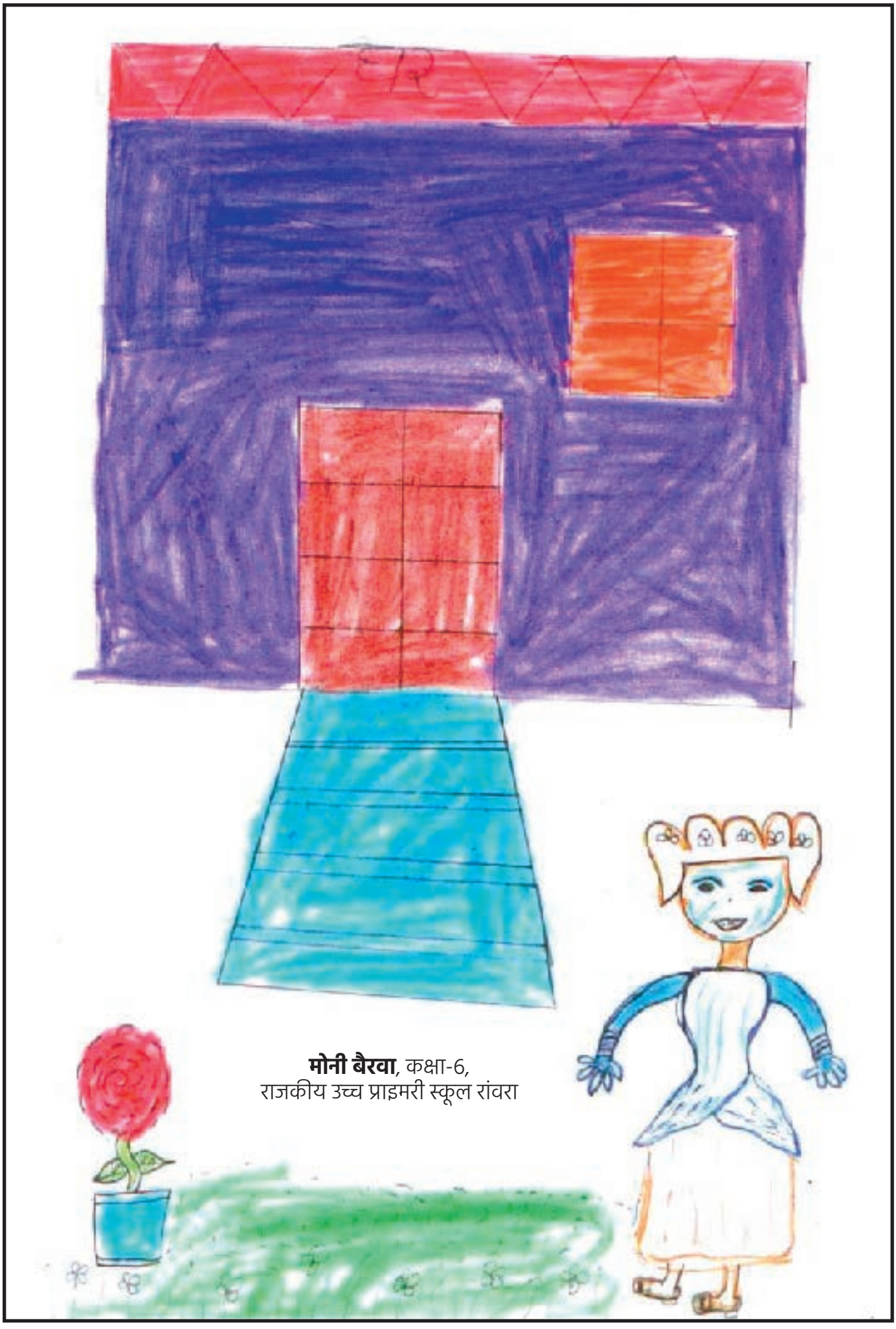

मोनी बैरवा, कक्षा-6,
राजकीय उच्च प्राइमरी स्कूल रांवरा